प्रातःक्लास 29-4-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

ओमशान्ति। पतित-पावन ज्ञान सागर शिव भगवानुवाचः बच्चे जानते हैं सतयुग है पावन राम-राज्य। कलियुग है पतित रावण-राज्य। तो गोया सभी आसुरी रावण सम्प्रदाय हो गये। कहते भी हैं ना आसुरी सम्प्रदाय और दैवी सम्प्रदाय। आसुरी सम्प्रदाय भ्रष्टाचारी सम्प्रदाय है ना। परन्तु किसको कहो तुम भ्रष्टाचारी हो तो बिगड़ पड़ेंगे। किसको कहो तुम स्वर्ग के चलने लायक नहीं हो तो, लायक के बदली नालायक कहो तो बिगड़ पड़ेंगे। यह अक्षर यहांही काम आते हैं। बच्चे यहां आते हैं तो समझते हैं हम ब्रह्माकुमार-कुमारियों पास जाते हैं नर से नारायण बनने, नारी से लक्ष्मी बननेलिए। भक्ति मार्ग में कथायें तो बहुत सुनी है। सत्य ना०की कथा अभी प्रैक्टीकल में सुनते हो। फिर भक्ति मार्ग में पास्ट की कथा सुनेंगे। अभी जो कुछ होता है वह प्रैक्टीकल सभी कुछ हो रहा है। फिर इनका भक्ति-मार्ग में गायन होगा। तुम फिर भी पुजारी बन जावेंगे। अभी तुम पूज्य बन रहे हो। बाप कहते हैं तुम्ही पूज्य तुम्ही पुजारी बनते हो। पूज्य कैसे बनते-फिर पुजारी कैसे बनते हैं, पूज्य कौन बनाते, पुजारी कौन बनाते हैं यह तुम जानते हो। इसको पढ़ाई कहा जाता है। भक्ति-मार्ग में मनुष्य कुछ भी समझते नहीं। इसलिए कहा ही जाता है पत्थर बुधि। आसुरी बुधि। कौड़ी जैसे भी नहीं। फिर कहा जाता है हीरे जैसा जन्म अमोलक वह भी है। तुम हीरे जैसा बन रहे हो। फिर 84 जन्मों बाद कौड़ी जैसा बनते हो। यह ल०ना० भी इस समय कौड़ी जैसे हैं। तो उन्हों की पूजा क्यों करें। यह जो हीरे मिशल थे, वह आत्मा कहां गई जिनको यह (ल०ना०का) शरीर मिला था। वह पुनर्जन्म लेते2 आकर गांवरे का छोड़ा बने हैं। कहां वह विश्व के मालिक, कहां फिर गांवरे के छोड़े। कितना फर्क है। यह नालेज भी तुम बच्चों को ही मिलती है। भक्ति मार्ग में कितने गपोड़े हैं। कल्प की आयु कितनी लम्बी-चौड़ी कर दी है। यह है चैतन्य-वृक्ष। इनकी आयु लाखों वर्ष थोड़े ही हो सकती है। तुम बच्चों को अभी ज्ञान मिलता है। तो तुम समझते हो हम सचमुच पहले बन्दर सेना थे जिन द्वारा बाप इस रावण राज्य को खलास करा कर नई दुनिया बनाते हैं। बच्चे जानते हैं आदी सनातन देवी देवता धर्म का हम अपना राज्य योगबल से स्थापन कर रहे हैं। बाहूं बल से तो कोई विश्व पर राज्य कर न सके। अभी एक क्रिश्चन का धर्म कितना बड़ा है। पौना हिस्सा दुनिया पर जैसे राज्य करते हैं। ऐसे भी कह सकते भिन्न2 भाईलोग बाहूंबल से अथवा लड़ाई के बल से राज्य करते थे। अफ्रिका, चीन जपान, हिन्दुस्तान में जैसे इन्हों का ही राज्य था। परन्तु बाहूंबल वाले विश्व पर राज्य कर न सके। अभी तुम बच्चों को सारे विश्व का राज्य मिलना है। तुम जब थे तो और कोई धर्म न था। 5000वर्ष की बात है। बाप कहते हैं तुमको मैं राज्य देकर गया, तुम सभी खर्च कर भिखारी बन गये हो। लज्जा थोड़े ही आती है। पीले पड़ जाते हैं। यह समझते भी है भारत विश्व का मालिक था। अभी कंगाल हो, भीख मांगते रहते हैं। लज्जा नहीं आती। भारत जो 100% सालवेन्ट था वह ही अभी 100% इनसालवेन्ट बन पड़ा है। अनाज़ भी इन्हों को सारा बाहर से मिलता रहता है। नहीं तो पहले भारत से ही सारा अनाज़ विलायत में जाता था। बहुत अनाज़ होता था। अभी वह रिटर्न में सर्विस कर रहे हैं। कितना अनाज़ बाहर से आता है। ढेर अनाज़ मंगाते रहते हैं। यह तो गप्पा मारते रहते हैं कि यहां बहुत अनाज़ हो जावेगा। तुम जानते हो अकाल तो पड़ना है। कुदरत आपदायें जरूर आनी है। तुम बच्चों को रहने लिए नई पवित्र दुनिया जरूर चाहिए। अभी तुम इसके लिए पुरु० कर रहे हो। यह सभी रचयिता और रचना का नालेज बाप ही बतलाते हैं। आगे तुम नहीं जानते थे। कोई भी शरीरधारी नहीं जानते थे। अभी बाप आये हैं। तुम आत्म-अभिमानी बनते हो तो जानते जाते हो। जितना आत्म-अभिमानी नालेज फुल बनेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। इसमें ही माया की युध चलती है। बाकी कौरवों पाण्डवों की लड़ाई नहीं है। वह है कौरव सम्प्रदाय, यह है पाण्डव सम्प्रदाय। तुम्हारा सेनापति कौन है? जो विश्व का मालिक है। वास्तव में विश्व का मालिक बनते नहीं हैं तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं। अभी तुम्हारी बुधि में सृष्टि का सारा चक्र फिरता रहता है। तुम्हारा नाम ही रखा है स्वदर्शन चक्रधारी। प्र

पिता ब्रह्मामुखवंशावली सर्वोत्तम ब्राह्मण कुलभुषण देवताओं से भी तुम्हारा कुल बहुत ऊंचा है। चोटी ऊंची है ना। विराट स्वधनाया है उसमें चोटी को भी उड़ा दिया है। तो बाप को भी ×× उड़ा दिया है। बाकी ये देवतायें क्षत्री वैश्य शुद्र चार वर्ण दिखाते हैं ना। क्यों कि यह डिनायस्टी होती है। ब्राह्मण कुल तो है बहुत छोटा। इनको किसको भी पता नहीं है। माला भी फेरते हैं तो उसमें भी युगल मेरु है। उनका समझाया जाता है यह ब्रह्मा सरस्वती। वा ल०ना०। कोई भी विद्वान आचार्य त्रिमूर्ति का अर्थ बता न सके। ब्रह्मा कितनासाधारण बैठा है और फिर विष्णु कितना सिंगारा हुआ है। इन्हों का सम्बन्ध कब कौन बता न सके। तुम झट बताते हो। यह ब्रह्मा ही एक सेकण्ड में विष्णु बनते हैं। विष्णु को ब्रह्मा बनने में 84 जन्म, 5000 वर्ष लगते हैं। यह है ही 84 का चक्र। बाकी शंकर के लिए बाप ने समझाया है ऐसी कोई चीज़ तो होती नहीं। गले में सर्पों की माला देख कर पार्वती ही डर जाये। और फिर उन पर कितनादोष रखा है कि धतूरा खाते हैं। भांग पीते थे। वह थोड़े ही किसका विनाश करते हैं। विनाश करना तो पाप है ना। यह सभी झूठ बतलाते हैं। आसुरी सम्प्रदाय है ना। जिस सोयस से सुख है उसी सोयस घमण्ड से दुःख भी होता है। एरोपलेन कितने सुख के लिए बनाये हैं। वह भी नीचे गिर पड़ते हैं तो खलास। फुल प्रुफ नहीं है। सतयुग में तो तुम फुल प्रुफ होते हो। कब गिरते नहीं। खराब हो न सके। पुराना होगा तो डिसट्राय कर देंगे। दुःख का नाम भी नहीं। यहां सुख के साथ दुःख भी है। बाप तुमको कोई भी तकलीफ नहीं देते। बाप को पुकारते हैं बाबा आप रहम दिल हो। आकर हमको पावन बनाओ। पानी को तो ऐसे नहीं प्रलु बुलाते। पानी तो पीते रहते हो। उसमें भी कचड़ा आद पड़ता है। यह नदियां भी सतयुग से चली आ रही हैं। अभी तुम समझते हो बाबा आकर हमारी आत्मा को कंचन करते हैं। आत्मा कंचन तो शरीर भी कंचन मिलता है। फिर खाद पड़ती है तो सतोप्रधान से त्रेतो सतो बन जाते हैं। आत्मा में जंक चढ़ी चांदी की। फिर तम्बे की। फिर लोहे की। बाप तो है हीप्युर चकमक। उसमें कब जंक लग न सके। सुई का मिशाल दिया जाता है ना। आत्मा तो इतनी छोटी बिन्दी है। आत्मा को भी जानना चाहिए ना। उनमें 84 का पार्ट अविनाशी है। आत्मा भी अविनाशी; पार्ट भी अविनाशी। बन्दर है ना। सब से जास्ती कुदरत है यह। चीज़ है तब तो कुदरत कहते हैं। सब से कुदरती है आत्मा। बहुत छोटी है। भृकुटि के बीच सितारा चमकता है। टीका भी यहां ही देते हैं। आत्मा को इन आंखों से देख नहीं सकते। इतनी छोटी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट। बन्दर है ना। सिवाय बाप के और कोई समझा न सके। तुम समझावेंगे तो कह देंगे यह तुम्हारी कल्पना है। अच्छा भला परमात्मा का रूप बताओ। जो कुछ सुना है तो कह देते हैं इतना तेजोमय है। अर्जुन का मिशाल बताया है ना। बाबा थोड़े ही कहते ऐसा रूप दिखाया जो मैं सहन नहीं कर सका। हम ने तो परमात्मा को देखा भी नहीं। आत्मा को देखा है। आत्मा का जब दीदार होता है तो पवित्र आत्मा का ही होगा। आत्मा भी पवित्र परमात्मा भी पवित्र है। फर्क तो है नहीं। तो आत्मा भी पवित्र बन कर घर में रहती है। बाप और बच्चों में कोई फर्क नहीं। सिर्फ वह जन्म, मरण रहित है। उनमें ज्ञान है कहते हैं अच्छा मेरा दीदार भी हो, फिर उन से फायदा क्या। आत्मा भी बहुत छोटी, बाप भी बहुत छोटा है। शिष्य गुरु के बाजु में बैठेंगे या गुरु आकर शिष्य के बाजु में बैठेंगे। यह भी ऐसे है ना। अभी बाप कहते हैं आत्माभिमानी बनो। पहले समझाते थे भाई-बहिन समझो। परन्तु इससे भी देहा क्रिमनल आई होती है तो फिर अभी कहते हैं भाई2समझो। आत्मा समझो तो नाम रूप से निकल जायेंगे। यह है बड़ी मंजिल। विश्व का मालिक बनना कम है क्या। तुम भी समझते हो अभी 84 का चक्र लगा करपूरा किया है। मनुष्यों ने तो 84 लाख योनियां बतला दी हैं। सभी हैं घोर अंधियारे में। बाप समझाते हैं यह तो कल्प ही 5000 वर्ष का है। अभी यह है पुरुषोत्तम संगम युग। तु?को कहते हैं क्या इतने सभी शास्त्र झूठे हैं। तुम सीधा किसको कहो किहां ठोठी है तो पत्थर मारते लग पड़े। बोलो झूठी नहीं है यह तो हम आधा कल्प से पढ़ते

हम आये हैं। पढ़ते2 तमोप्रधान बन गये हैं। इसलिए बाप आकर सत्य बताते हैं। उनको कहा जाता है ट्रुथ। सभी सच्च ही बतलाते हैं। सच्च खण्ड की स्थापना करते हैं। भारत सच्च खण्ड था। अभी झूठ खण्ड है। तुम मीठे2 बच्चे जानते हो राज्य लेना और गंवाना यह तुम्हारा खेल है। ज्ञान चिक्षा पर बैठने से राज्य लेना काम चिक्षापर बैठने से राज्य गंवाना। यह ड्रामा का खेल भारत में ही है। बाकी तो है वायप्लाट्स। अपनाधर्म बहुतसुखदेने वाला है। फिर तो अपना धर्म की बात छोड़ दूसरे धर्म की बात ही क्यों करें। देवता धर्म की निशानियां तो है ना। (बनियन ट्री का मिशाल) यह तो और सभी धर्म भी हमारे आदी सनातन देवी देवता धर्म के ब्रान्चेज हैं। बड़ के झाड़ का भी यह वन्डर है। बड़ की झाड़ भी बहुत बड़ा होता है। हमारा आदी सनातन देवी देवता धर्म जो फाउन्डेशन है वह अभी है नहीं। बाकी तो सभी धर्म खड़े हैं। बाप कहते हैं मैं आता हूं आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करने। फिर और सभी खलास हो जावेंगे। वहां भक्ति का नाम नहीं। बाप कहते हैं सब से जादा भक्ति भी मैंने और तुम बच्चों ने की है। जो बच्चे अच्छी रीत धारण कर और करा× कराते हैं वही पहले भक्ति में भी थे। अव्यभिचारी शिव बाबा की भक्ति उन्हों ने की थी जो इस समय बहुत होशियार हैं। बाकी तो नम्बरवार हैं। सभी तो सतयुग में नहीं आवेंगे। जो पीछे आनेवाले× वाले हैं अभी तक भी आते रहते हैं। वह स्वर्ग में जा नहीं सकते हैं। यह भी बड़ा हिसाबकिताब है। यह भी अभी तुम समझते हो। फिर घर में गयेथोड़े आद में सभी भुल जाते हो। झोली खाली हो जाती है। टीचर तो सभी को जैसा पढ़ाते हैं। कोई योग युक्त न है तो झोली में ठहरता नहीं। बह जाता है। बाप तो सभी का झोली भरती है। टीचर पढ़ाते तो एक रस है। फिर कोई फेल हो तो कोई स्कालरशिप ले लेते हैं। कोशिश कर स्कालरशिप लेनी चाहिए। तुम कहते भी हो हम आये ही हैं नर से नारायण नारी से ल० बनने। बाप सत्य नारायण की कथा सच्चा2 सुनाते हैं। सारी राजधानी बनती है। कल्प पहले मिशाल। इसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता। कहते हैं यह पहाड़ तोड़2 कर इतने मकान बने फिर पहाड़ कैसे बनेंगे। और यह ड्रामा का चक्र रिपीट होता है। फिर भी हू बहू रिपीट होगा। सोमनाथ का मंदिर फिर भी बनेगा। खानियां फिर भरपूर हो जावेंगे। अभी तो कलराठी धरती है। तो अनाज आद में भी इतना स्वाद नहीं है। यह ज्ञान बाप ही देते हैं। बाकी तो सभी है भक्ति। भक्ति जन्म-जन्मान्तर की जाती है। ज्ञान एक अंतिम जन्म में बाप ही देते हैं। ज्ञान से सदगति होती है। पर मिल जाती है। अभी पर टूटे हुये हैं। तो आत्मा उड़ नहीं सकती। घोर अंधियारा है ना। ज्योत बुझी हुई है। बापसामने बैठते हैं तो बैटरी भरती है। परन्तु सभी थोड़े ही बाप से योग लगाकर बैठते हैं। कहां न कहां बुधि भाग जाती है। भक्ति में भी ऐसे होता है। कोई विरला कोईनदधा भक्ति करते हैं। तब ही सा० होता है। बस समझते हैं यह भगवान से मिल गया। बाप कहते हैं भगवान से मिलता कोई भी नहीं है। सिर्फ मेहनत का फल मिला सा० हुआ। भावना का भाड़ा मिला बस। वह कोई पढ़ाई नहीं है। यहां तो पढ़ाई है। बाप आकर मीठे2 बच्चों को पढ़ाते हैं। कहते हैं मैं पतित पावन हूं। मुझे याद करो। बाप भी बच्चों को याद करते हैं। याद उनको करेंगे जो अच्छी रीत यात्रा में और सर्विस में लगे रहते हैं। ऐसे2 बच्चों को बाप उनकी आत्मा को भी और शरीर को भी याद करते हैं। शरीर बिगर तो आत्मा याद आ न सके। पहले शरीर फिर पीछे आत्मा। फलाने की आत्मा याद करती है। तो फलाना याद आवेगा ना। मनोहर हू- कुमारका है, मोहनी है बहुत अच्छा याद करती है। बहुतों की सर्विस करती है। सर्विस बिगर रह नहीं सकती। जैसे बाबा भी सर्विस पर आये हैं सर्विस बिगर रहते थोड़े ही हैं। कुछ भी हो बाबा मुरली जरूर सुनावेंगे। हास्पीटल में होता हूं तो दो चार दिन नहीं चलाते हैं। फिर लिखता हूं। वह भी जैसे मुरली चली ना। मुरली नालेज को कहा जाता है। यह है ही पढ़ाई। बाप कहते हैं मैं सुप्रीम टीचर हूं। सुप्रीम बाप भी हूं। लौकिक बाप बड़ा या पारलौकिक बाप बड़ा? लौकिक बाप भी पारलौकिक को याद करते हैं। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग।